3 जिनवाणी माता रत्नत्रय...

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये ॥ टेक ॥
मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण से, काल अनादि घूमे।
सम्यग्दर्शन भयौ न तातै दुःख पायो दिन दूने ॥ 1
जिनवाणी. . ॥
है अभिलाषा सम्यग्दर्शन - ज्ञान - चरण दे माता ।
हम पावैं निजस्वरूप आपनों, क्यों न बनै गुण ज्ञाता ॥2॥
जिनवाणी. . ॥
जीव अनन्तानन्त पठाये स्वर्ग मोक्ष में तूने ।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने ॥3 ॥
जिनवाणी. . ॥
भव्य जीव है पुत्र तुम्हारे, चहुँगति दुःख से हारे ।
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण गण सारे ॥4॥
जिनवाणी. . ॥
औगुण तो अनेक होत है, बालक में ही माता ।
पैं अब तुमसी माता पाई, क्यों न बनें गुण ज्ञाता ॥5॥
जिनवाणी. . ॥

हे जिनवाणी माता! मुझे रत्नत्रय रूपी निधि प्रदान करो।।टेक॥

मैं मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र के कारण अनादिकाल से संसार में घूम रहा हूँ और सम्यक दर्शन के बिना हर दिन दुगने-दुगने दु:ख प्राप्त करता रहा हूँ अर्थात इन दु:खों में मात्र वृद्धि ही हो रही है, हानि नही॥1॥

हे जिनवाणी माता! मेरी यही भावना है कि आप मुझे सम्यक्-दर्शन, सम्यक्-ज्ञान, सम्यक्-चारित्र प्रदान करें अर्थात मुझे रत्नत्रय की प्राप्ति हो। अपने स्वरूप की प्राप्ति कर हम अपने आत्म गुणों को पहचानें॥2॥

हे जिनवाणी माता! तुमने अनंत जीवों को स्वर्ग और मोक्ष प्रदान किया है। अब हमारी बारी है कि हम भी कर्मों को नष्टकर सिद्ध पद की प्राप्ति करें॥3॥

हे जिनवाणी माता! भव्य जीव तुम्हारे पुत्र हैं, जो चार गतियों के दु:ख से थक गए हैं अर्थात विरक्त हैं इसलिए इनको अतिशीघ्र आत्म गुणों का ज्ञान कराकर, जिनेंद्र परमात्मा बना दो॥4॥

हे जिनवाणी माता! बालकों में तो अनेक अवगुण होते हैं लेकिन तुम जैसी माता को पाकर हम अपने गुणों को क्यों ना जानें अर्थात् हमें अपने आत्म गुणों को पहचानना चाहिए॥5॥